16

धर्मवीर भारती

'धर्मयुग' के संपादक के रूप में यश अर्जित करने वाले धर्मवीर भारती का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में 1926 ई. में हुआ था। आपने प्रारंभिक शिक्षा सरकारी स्कूलों में पायी। उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और पीएच.डी. की उपाधि अर्जित कर वहीं पर आप हिन्दी विभाग में अध्यापक हो गए। इसके पूर्व इन्होंने इलाहाबाद से छपने वाले साप्ताहिक **संगम** में उप-संपादक के रूप में काम किया। उन्हें शिक्षण की अपेक्षा पत्रकारिता से अधिक लगाव था। फलस्वरूप 1959 ई. में विश्वविद्यालय छोड़कर वे **धर्मयुग** साप्ताहिक पत्र का संपादन करने के लिए मुंबई चले गए।

दूसरा सप्तक में विशिष्ट कवि के रूप में स्थान पाने के कारण उनकी गिनती प्रयोगवादी कवियों में की जाती है, किंतु, मूलतः वे गीतकार ही थे। रोमानी कवि के रूप में वे प्रेम और सौंदर्य के गायक कवि हैं। इसके लिए उन्होंने पौराणिक आख्यानों को भी अपने काव्य का विषय बनाया है। **अंधायुग** और **कनुप्रिया** इसके साक्षी हैं। इन दोनों काव्यों में भारती के काव्य-शिल्प की एक नयी भंगिमा दिखती है।

उपर्युक्त कृतियों के अलावा भारतीजी की अन्य कृतियाँ हैं- **ठंडा लोहा** तथा **सात गीत वर्ष**। भारतीजी ने विश्व साहित्य से चुनकर श्रेष्ठ कविताओं का हिन्दी रूपांतरण भी किया है।

कविता के साथ-साथ भारतीजी ने उपन्यास, नाटक, कहानी और निबंध भी लिखे हैं। इनमें उनकी प्रमुख पुस्तकें **गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा, ठेले पर हिमालय, कहनी-अनकहनी, बंद गली का आखिरी मकान** आदि हैं। 1997 ई. में धर्मवीर भारती का देहावसान हो गया।

संकलित कविता **टूटा पहिया** भारती जी के **सात गीत वर्ष** नामक काव्य-संकलन से ली गयी है। यह एक प्रतीकात्मक कविता है। इसका संदेश यह है कि जीवन में तुच्छ से तुच्छ और लघु से लघु समझी जाने वाली वस्तु अथवा व्यक्ति भी कभी असत्य और अन्याय से लड़ने में अत्यधिक उपयोगी और शक्तिशाली सिद्ध हो सकता है। महाभारत के **चक्रव्यूह** प्रसंग को आधार बनाकर कवि ने यहाँ इसी तथ्य को निरुपित किया है। चक्रव्यूह में घिरे, अकेले और निहत्थे अभिमन्यु ने अपने रथ के टूटे पहिए से असत्य पक्ष के भयंकर अस्त्रों से लोहा लिया था।

टूटा पहिया

मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ
लेकिन मुझे फेंको मत!
क्या जाने कब-
इस दुरूह चक्रव्यूह में
अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता
हुआ
कोई दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर
जाय।

अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी
बड़े-बड़े महारथी
अकेली-निहत्थी आवाज को
अपने ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें,
तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथों में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ,
मैं रथ का टूटा हुआ पहिया हूँ!

लेकिन मुझे फेंको मत
इतिहासों की सामूहिक गति
सहसा झूठी पड़ जाने पर
क्या जाने-
सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले!!

अभ्यासमाला

बोध एवं विचार

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1. रथ का टूटा पहिया स्वयं को न फेंके जाने की सलाह देता है, क्योंकि –

   (क) उसे मरम्मत करके फिर से रथ में लगाया जा सकता है।

   (ख) किसी दुस्साहसी अभिमन्यु के हाथों में आकर ब्रह्मास्त्र से लोहा ले सकता है।

   (ग) इतिहासों की सामूहिक गति झूठी पड़ जाने पर सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले सकता है।

   (घ) ऊपर के **ख** और **ग** दोनों सही है।

2. 'दुरूह चक्रव्यूह में अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती' किसने दी थी ?

   (का) अभिमन्यु ने (ख) द्रोणाचार्य ने

   (ग) अर्जुन ने (घ) दुर्योधन ने

3. 'अपने पक्ष को असत्य जानते हुए भी ....'

   –यहाँ किसके पक्ष को असत्य कहा गया है।

   (क) युधिष्ठिर का (ख) दुर्योधन का

   (ग) अभिमन्यु का (घ) कृष्ण का

4. 'ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ' – यह किसका कथन है ?

   (क) भीष्म का कथन

   (ख) परशुराम का कथन

   (ग) टूटे हुए पहिए का कथन

   (घ) भीम के गदा का कथन

(आ) निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दो :

1. कवि ने अभिमन्यु को दुस्साहसी क्यों बताया है ?
2. 'दुरूह चक्रव्यूह' का महाभारत के संदर्भ में और आज के संदर्भ में क्या तात्पर्य है ?
3. कवि ने किस तथ्य के आधार पर कहा कि –'असत्य कभी सत्य को बर्दाश्त नहीं कर पाता'?
4. 'लघु से लघु और तुच्छ से तुच्छ वस्तु' किन परिस्थितियों में अत्यधिक उपयोगी हो सकती है ?
5. 'इतिहास की सामूहिक गति का सहसा झूठी पड़ जाने' का क्या आशय है ?
6. कवि के अनुसार सच्चाई टूटे पहियों का आश्रय लेने को कब विवश हो सकती है ?

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. **निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय अलग करो :**
   सामूहिक, आवश्यकता, सनसनाहट, पाठक, पूजनीय, परीक्षित
2. **निम्नांकित शब्दों में से उपसर्ग अलग करो :**
   दुस्साहस, अनुदार, बदसूरत, निश्चिंत, बेकारी, अज्ञानी

योग्यता-विस्तार

1. महाभारत में वर्णित चक्रव्यूह का प्रसंग पढ़ो और कक्षा में चर्चा करो।
2. 'ब्रह्मास्त्र' क्या है ? इसकी जानकारी हासिल करो और कक्षा में चर्चा करो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

दुरूह	=	कठिन
चक्रव्यूह	=	चक्र के आकार में सेना की स्थापना, महाभारत के युद्ध में जिस दिन अभिमन्यु लड़ा था, उस दिन द्रोणाचार्य ने इसी व्यूह की रचना की थी।
अक्षौहिणी	=	चतुरंगिनी सेना का एक विभाग (जिसमें 109350 पैदल, 65610 घोड़े, 21870 रथ और इतने ही हाथी शामिल होते हैं)
दुस्साहसी	=	खतरे से भरे कार्य के लिए साहस करने वाला
महारथी	=	योद्धा
ब्रह्मास्त्र	=	ब्रह्मशक्ति से परिचालित अमोघ माना जाने वाला एक अस्त्र, महाविनाशकारी अस्त्र।
इतिहासों की ... आश्रय ले	=	ब्रह्मास्त्रों (जैसे आज के परमाणु बम) की सहायता से लड़े गये युद्ध की व्यापक विनाश लीला के बाद इतिहास की गति अवरुद्ध-सी जान पड़े और जो भी साधारण से साधारण व्यक्ति और टूटे पहिये जैसा हथियार शेष बचे, उससे ही इतिहास को नयी गति मिले।
आश्रय	=	आसरा, सहारा
निडर	=	जो डरे नहीं
पंथ	=	मार्ग